जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा, गुरुग्राम

ॐ अर्हम्

तेरापंथ–मेरा पंथ

कार्यक्रम प्रतिवेदन

Zoom के माध्यम से आयोजित ऑनलाइन वैचारिक कार्यक्रम

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा, गुरुग्राम द्वारा *Zoom* के माध्यम से आयोजित "तेरापंथ–मेरा पंथ" कार्यक्रम के अवसर पर उपस्थित सभा पदाधिकारी एवं सधार्मिक परिवारजन।

मुख्य उद्देश्य	तेरापंथ दर्शन को सरल, तर्कसंगत और व्यवहारपरक रूप में समझना—विशेषतः दान, दया, अहिंसा, संयम और आत्मकल्याण की दृष्टि से।

कार्यक्रम का आयोजन

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा, गुरुग्राम द्वारा सत्र 2026–28 के प्रथम प्रकल्प के रूप में “तेरापंथ–मेरा पंथ” कार्यक्रम Zoom के माध्यम से आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य तेरापंथ धर्मसंघ के सिद्धांतों को शास्त्रीय आधार के साथ सहज भाषा में समझना तथा साधार्मिक परिवारों को विचार, संवाद और आत्मचिंतन के लिए एक सार्थक मंच प्रदान करना था। कार्यक्रम में परिवारों ने ऑनलाइन जुड़कर विषय का लाभ लिया।

मुख्य वक्ता का परिचय

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता CA महेन्द्र कुमार दक थे। वे मूलतः कूकरखेड़ा (राजसमंद) निवासी स्वर्गीय श्री धर्मीचंदजी दक के सुपुत्र हैं और वर्तमान में बेंगलुरु प्रवासी हैं। चार्टर्ड एकाउंटेंट के रूप में व्यावसायिक दायित्वों के साथ उन्होंने लगभग 35 वर्षों से युवक परिषद, सभा, प्रोफेशनल फोरम और अणुव्रत समिति जैसी संस्थाओं में स्थानीय तथा केंद्रीय स्तर पर विभिन्न दायित्वों का निर्वहन किया है। पिछले लगभग दस वर्षों से वे प्रवक्ता उपासक के रूप में सेवाएँ दे रहे हैं तथा महासभा की सेवा साधक श्रेणी के अंतर्गत प्रतिवर्ष एक माह धर्मसंघ सेवा में समर्पित करते हैं।

कार्यक्रम से जुड़ा आत्मीय क्षण—सभा पदाधिकारी एवं सधार्मिक प्रतिनिधि।

विषय-विवेचन : दान का वास्तविक स्वरूप

प्रस्तुति में दान को केवल किसी वस्तु या धन के हस्तांतरण तक सीमित न मानकर “अपने और दूसरों के उपकार के लिए किया गया वितरण” बताया गया। समाज एवं आत्मा—दोनों के कल्याण के संदर्भ में दान की उपयोगिता स्पष्ट करते हुए लौकिक और लोकोत्तर दान का भेद समझाया गया।

- लौकिक दान सामाजिक कर्तव्य और मानवीय सहायता से जुड़ा है—जैसे शिक्षा, चिकित्सा, भोजन, आवास अथवा अन्य जनकल्याणकारी व्यवस्थाएँ।
- लोकोत्तर दान वह है जिसमें अहिंसा और संयम का पोषण हो तथा आत्मिक विकास की दिशा सुदृढ़ बने।
- धर्मदान के तीन प्रमुख रूप बताए गए—अभयदान, संयमीदान और ज्ञानदान।
- ज्ञानशाला में पढ़ाना, तत्त्वज्ञान सिखाना, प्रवचन करना और तत्त्वचर्चा करना ज्ञानदान के महत्त्वपूर्ण रूप हैं।

विवेचन में यह भ्रम भी दूर किया गया कि तेरापंथ दान के विरुद्ध है। स्पष्ट किया गया कि लौकिक दान व्यक्तिगत विवेक और सामाजिक दायित्व का विषय है; वहीं साधु-साध्वी लोकोत्तर दान का आचरण करते हैं और उसकी प्रेरणा देते हैं।

विषय-विवेचन : दया, अहिंसा और आत्मरक्षा

दया को करुणा के रूप में समझाते हुए लौकिक और लोकोत्तर दया का अंतर प्रस्तुत किया गया। लौकिक दया में प्राणरक्षा और संवेदनशील सहायता का भाव प्रमुख है; लोकोत्तर दया का केंद्र आत्मा को पापकारी प्रवृत्तियों से बचाना है। इस दृष्टि से अहिंसा का गहरा उद्देश्य केवल बाहरी जीवन-रक्षा नहीं, बल्कि व्यक्ति के भीतर हिंसा, मोह और असंयम की वृत्ति को रोकना भी है।

- सच्ची दया विवेकपूर्ण होती है; वह केवल भावुक प्रतिक्रिया नहीं, आत्मशुद्धि की दिशा भी है।
- पापकारी प्रवृत्ति का त्याग स्वयं व्यक्ति और उससे प्रभावित अन्य प्राणियों—दोनों के लिए कल्याणकारी बनता है।
- शुभ योग से पुण्य का बंध होने के साथ कर्मों की निर्जरा भी होती है; अतः पुण्य और आत्मिक प्रगति के संबंध को समग्रता से समझना आवश्यक है।

कार्यक्रम की विशेषता

कार्यक्रम की प्रमुख विशेषता यह रही कि सामान्यतः प्रचलित शब्दों—दान, दया, पुण्य और अहिंसा—को केवल भावनात्मक या सामाजिक अर्थों में नहीं, बल्कि जैन आगमिक और आध्यात्मिक दृष्टि से विश्लेषित किया गया। उदाहरणों और वर्गीकरण के माध्यम से विषय को सरल बनाया गया, जिससे श्रोताओं को लौकिक कर्तव्य और लोकोत्तर साधना के बीच का अंतर समझने का अवसर मिला।

मुख्य संदेश

> “तेरापंथ का चिंतन व्यक्ति को करुणा से विवेक, दान से आत्मकल्याण और अहिंसा से आत्मसंयम की ओर ले जाता है।”

आभार एवं निष्कर्ष

कार्यक्रम ज्ञानवर्धक, चिंतनपरक और व्यवहारोपयोगी रहा। सभा ने CA महेन्द्र कुमार दक के प्रति उनके अध्ययनपूर्ण मार्गदर्शन के लिए तथा Zoom के माध्यम से जुड़े सभी साधार्मिक परिवारों के प्रति सहभागिता के लिए हार्दिक आभार व्यक्त किया। “तेरापंथ–मेरा पंथ” श्रृंखला धर्मसंघ की मान्यताओं को समझने, जिज्ञासाओं का समाधान करने और नई पीढ़ी को तेरापंथ दर्शन से जोड़ने की दिशा में एक उपयोगी पहल सिद्ध हुई।

प्रस्तुतकर्ता

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा, गुरुग्राम